REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2023

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में महिला लेखिकाओं का नारी चित्रण

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)

हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण की असीम संभावनाएँ निहित रही है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक नारी मनोविज्ञान का जितना विस्तृत और गहरा चित्रण उपन्यासों में मिलता है उतना अन्य किसी विधा में नहीं। नारी की मानसिकता के विकास क्रम के अध्ययन के लिए उपन्यास साहित्य अधिक महत्वपूर्ण है। बीसवी सदी का अंतिम चरण तथा इक्कीसवी सदी के प्रथम चरण हिन्दी में स्त्री लेखन की सम्पूर्णता का समय है। इस समय के स्त्रियों ने अपनी दृष्टि का विस्तार किया है तथा परंपरागत नारी चिंताओं और प्रश्नों से मुक्त होकर लेखिकाओं ने इस दौर के कथा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है। इस समय के कथा साहित्य में स्त्रियाँ अपने आत्मसंघर्ष के अलावा सामाजिक, राजनीतिक, आथिर्क और सांस्कृतिक रूढ़ियों एवं जड़ता के स्तर पर संघर्ष एवं विद्रोह करती हुई दिखाई देती है।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के प्रायः सभी प्रमुख उपन्यासकारों ने नारी की समस्याओं और उसके जीवन संघर्ष को उपन्यासों में स्थान दिया है। प्रमुख पुरुष कथाकारामें राम दरश मिश्र के 'बिना दरवाजे का मकान', सुरेन्द्र वर्मा के 'मुझे चाँदचाहिए', भीष्म साहनी के 'बसंती' आदि का नाम लिया जा सकता है। इस क्षेत्र में महिला लेखिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी जीवन की सामाजिक स्थिति और मनोवैज्ञानिक स्वरूप को, सृजनता को, नारी जीवन की विसंगतियों के साथ – साथ नारी की वैयक्तिकता को स्थापित करने की क्षमता रखने वाले संवेदनशील कथाकार तथा उनके महत्वपूर्ण रचनाओं में मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब', 'उसके हिस्से की धपू' तथा 'चितकोबरा', नाशिरा शर्मा के 'शाल्मली' और 'कईयाँजान', चित्रा मुद्गल के 'आवां', प्रभा खेतान की 'पीली आँधी' तथा 'स्त्री – पक्ष', कृष्णा सोबती के 'समय सरगम', मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक', मन्नू भण्डारी के 'आपका बंटी' तथा 'एक इंच मुस्कान' आदि का नाम लिया जा सकता है। पिछले कुछ दशकों के हिन्दी उपन्यासों में नारी विमर्श ने कई बड़े बड़े बदलाव का सामना किया है। आधुनिक महिला उपन्यासकारों ने इस धारा को गतिशील बनाए रखने का प्रयास किया है।

इक्कीसवी सदी के इन प्रमुख महिला कथाकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री को मूलतः शोषित और दलित के रूप में, विद्रोही नारी के रूप में, परंपरागत नारी के रूप में, स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में, कामकाजी महिला के रूप में, वात्सल्यमयी अनुभूति के रूप में तथा पुरुष की सहचरी आदि अनेक रूपों में चित्रित किया है। इस पर संक्षिप्त रूप से आलोचना किया जा रहा है –

शोषित और दलित के रूप में :

प्राचीन काल से ही भारतीय स्त्री को एक वस्तु, एक भोग्या के रूप में देखता आया है। प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यासकार चित्रा मुद्गल ने उनके चर्चित उपन्यास 'आवा' में नायिका 'नमिता' के द्वारा पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में नारी के शोषण के विविध स्वरूपों तथा उसकी पीड़ा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में नायिका 'नमिता' गरीबी और अभावग्रस्तता के कारण बाल्यावस्था में अपने मौसा के द्वारा, यूनियन कार्यालय

में अन्नासाहब के द्वारा और ज्वैलरी शोरूम के मालकिन के जरिये व्यवसायी संजय के द्वारा देह शोषण का शिकार बनती है और कँवुारी अवस्था में ही माँ बनने के लिए विवश होती है।

इस दृष्टि से नासिरा शर्मा के उपन्यास भी उल्लेखनीय है। वे पाश्चात्य नारी स्वतंत्रता को भारतीय परिवेश में निषेध करती है साथ ही नारी पर होने वाले अत्याचार, अन्याय तथा शोषण का विरोध भी करती है। उनके प्रारम्भिक उपन्यास की नायिका 'शाल्मली' उच्च पद पर काम करती है परंतु सामान्य पद पर काम करनेवाले पति नरेश के पुरुषजन्य अहम के कारण वह प्रति दिन अपमानजनक व उपेक्षापूर्ण व्यवहार को सहन करती है। नासिरा शर्मा ने 'औरत के लिए औरत' नामक उपन्यास में कहा है कि औरत अधिक ईमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धैर्यवान और बलिदान करनेवाली एक ऐसी जीव है जिसका मुकाबला दुनिया का दूसरा प्राणी नहीं कर सकता है।

आधुनिक अपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में नारी की महत्वाकांक्षा, वैयक्तिक रुचि, स्वतन्त्रता की भावना, अस्मिता कि खोज से कहीं ज्यादा दुख और संघर्ष से घिरा हुआ है।

विद्रोही नारी के रूप में :

मृदुला गर्ग के उपन्यासों की स्त्री पात्र पाश्चात्य नारी की भाँति पितृसत्तात्मक सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करती हुई नजर आती है। उनका एक प्रमुख उपन्यास 'कठगुलाब' में उन्होंने चार नारी पात्रों के माध्यम से नारी के विविध स्वरूपों को चित्रित करते हुए उसके जीवन संघर्ष तथा उसकी सामाजिक और मानसिक पीड़ा को व्यक्त किया है। इस उपन्यास में 'स्मिता' और 'मारियान' उच्च शिक्षा से जुड़ी प्रबुद्ध स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है और 'नर्मदा' श्रमिक वर्ग की एक ऐसी स्त्री के रूप में सामने आती है जो अपने जीजा द्वारा देहिक शोषण का शिकार बनकर विवशता में उससे विवाह करती है और जीजा उसके जीवन को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर देता है। इस उपन्यास में नारी के लिए कहा गया है 'औरत तेरा नाम ही विडम्बना है।'

लेकिन उपन्यास के अतं में नारी शक्ति को दर्शाया गया है ''लड़ाई, संघर्ष, युद्ध, मेहनत, तैयारी, परिकल्पना, मार्गदर्शन, अनुगमन। बहुत शक्ति है उसके पास। दुःख की निस्सीम शक्ति।''

मैत्रेयी पुष्पा के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'चाक' की नायिका 'सारंग' रूढ़िवादी समाज में नारी पर किये जाने वाले अत्याचार, शोषण व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर गाँव की सरपंच बनती है।

परंपरागत नारी के रूप में :

हिन्दी साहित्य के उपन्यासकारोंने अपने उपन्यासों में नारी को परम्परागत स्त्री के रूप में चित्रित किया है, जो अपनी इच्छाओं को तिलांजलि देती हुई अपने परिवार के लिए मर मिटती है। इसमे हम प्रमुख रूप से नाम ले सकते है 'प्रभा खेतान' की 'पीली आंधी'। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र 'पद्मावती' नारी के इस परम्परागत रूप को निभाती हुई बताती है – उस किशोरी ने एक बार अपने अधरे निःसंतान पति की ओर देखा, वृद्धा सास को दखा, देवर – देवरानी का स्वभाव समझा, घर की बेतरतीब व्यवस्था को देखा और मन ही मन सोचा, जैसे पति की सेवा करना मेरा धरम है, वैसे ही सास की आज्ञा मानना मेरा फर्ज है।

स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में :

हिन्दी महिला उपन्यासकारों में एक प्रमुख नाम 'कृष्णा सोबती' का है। उनके साहित्य में जीवन की सच्चाई है। उनका एक प्रमुख उपन्यास है 'समय सरगम'। 'अरण्या' इस उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र है। वह पेशे से एक लेखिका है। उपन्यास के लगभग सभी पात्र जीवन के अंतिम दौर से गुजर रहे है। जीवन की संध्या – वेला में मृत्यु भय तथा पारिवारिक – सामाजिक उपेक्षा को महसूस करते हुए इन पात्रों में उदासी, अकेलापन, अविश्वास घर करते जा रहा है। ऐसे में 'अरण्या' ही एकमात्र पात्र है, जो मृत्यु भय को भुलाकर जीवन के प्रति गहरी आस्था लिए जी रही है। उनका अविवाहित और अकेले रहने का फैसला इस उम्र में उसकी समस्या नहीं वल्कि स्वतंत्रता है।

कामकाजी महिला के रूप में :

महिला कथाकारों में सर्वाधिक चर्चित बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कथाकार के रूप 'मन्नू भण्डारी' का नाम भी लिया जाता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में कामकाजी महिला के चित्र प्रस्तुत किए है। 'मन्नू भण्डारी' के उपन्यास 'आपका बंटी' की 'शकुन' कॉलेज की प्रिन्सिपल है। उनका एक और उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' की नायिका 'रंजना' भी आत्मनिर्भर है।

वात्सल्यमयी अनुभूति के रूप में :

स्त्री शब्द के साथ 'माँ' शब्द एक गहेर संबंध के साथ जुड़ा है। माँ बने बिना नारी को अधुरी माना जाता है। यह अधूरापन जब पूर्णता को प्राप्त होता है, तब स्त्री के मन में एक अजीब सी वात्सल्यमयी अनुभूति होती है। जिसका एहसास एक माँ ही कर सकती है। इस सच्चे वात्सल्य का चित्रण 'प्रभा खेतान' ने अपने उपन्यास 'स्त्री–पक्ष' की नायिका 'बृंदा' द्वारा की है। इस उपन्यास में 'बृंदा' नायक 'सुमित' से कहती है कि माँ होना स्वयं में एक बड़ा चमत्कारिक अनुभव है। भगवान को खोजने की जरूरत नहीं। मैं पजु ा किसकी करु ? सारे तीरथ मुझे अपने बच्चों में फलीभूत होने लगते है।

पुरुष की सहचरी के रूप में :

भारतीय समाज स्त्री को वस्तु के समान मापा – तोला जाता है। लेकिन आज नारी की छबि बदलने लगी है। आज नारी को पुरुष की सहचरी के रूप में माना जाता है। इसमें नासिरा शर्मा के 'कुइयाँजान' उपन्यास का नाम लिया जा सकता है। इस उपन्यास के द्वारा नासिरा शर्मा ने स्त्री–पुरुष के परस्पर पूरक और अपरिहार्य संबंधों को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में पति–पत्नी के रूप में नायक 'कमाल और समीना', 'रत्ना और रमेश', 'जमालखाँ और शकरआरा' एक दूसरे के बिना अपना अस्तित्व ही निरथर्क समझते है।। अतः देखा जाता है कि हिंदी साहित्य के महिला उपन्यासकारों ने स्त्री के परंपरागत रूप के साथ – साथ नारी – सशक्तिकरण के लिए भी अपने लेखन के माध्यम से प्रयास किया है। इन उपन्यासकारों ने भारतीय स्त्री के हर रूप को उभारा और उपन्यास को ही अपना आवाज बनाया तथा उसी के माध्यम से स्त्री के विषय में हर एक बात कहने की सफल प्रयास की है।

निष्कर्ष :

समय बदल गया लेकिन भारतीय समाज में नारी के लिए जो मानसिकता प्रारम्भ में स्थापित हुई उसमे किसी प्रकार का कोई बदलाव नहीं आया। जिसका यथार्थ वर्णन विभिन्न साहित्यिक कृतियों में परिलक्षित होता है। नारी चाहे माँ हो, पत्नी हो, बेटी या बहन हो उसे इस समाज में स्वतंत्र रहने का अधिकार प्राप्त नहीं है।। महिला की स्थिति समाज में तभी सुरक्षित होगी, जब वह सम्मानीय और मर्यादापूर्ण होगा। नारी को आर्थिक स्तर के साथ साथ अपने मानसिक स्तर को भी उतना ही परिपक्व बनाना होगा, तभी उसे अपना हक मिल पायेगा। परंपरागत विचारों से जकड़ी नारी अपनी स्वतन्त्रता को कभी नहीं पा सकती। इसके लिए उसे विचारों को वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों से जोडना होगा। तभी वह अपनी पहचान स्थापित कर पाएगी।

संदर्भ :

1. तिवारी, डॉ. कामिनी – प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श विद्या प्रकाशन, 2011,पृष्ठ–173।
2. गर्ग, मृदुला – कठगुलब – लोकभारती प्रकाशन, इलाहवाद, 2002, पृष्ठ –105।
3. वही, पृष्ठ –199।
4. खेतान, प्रभा – पीली आंधी – लोकभारती प्रकाशन इलाहावाद, 2002, पृष्ठ – 171।
5. खेतान, प्रभा – स्त्री–पक्ष, जनसत्ता सवरंग, 4 अप्रलै 1999, नौंवी कडी, पृष्ठ –231।

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)